BA-2
Paper. 3
Geography of India & Bihar

(LECTURE - 2)

Vishal
V.S.J. college

बिहार: प्राकृतिक प्रदेश

• बिहार का मैदान :-

बिहार राज्य का अधिकांश भाग (95%) मैदानी है, जो गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ से बना है। यह लगभग 90650 $K.m^2$ क्षेत्र में फैला है। इसकी औसत ऊँचाई समुद्रतल से 60 से 120 मी. है और इसका ढाल सर्वत्र एक जैसा एवं धीमा है। गंगा नदी बिहार-मैदान को दो भागों में बाँटती है, जिसमें उ० भाग बिल्कुल समतल है। लेकिन द० के मैदान में जहाँ-तहाँ कुछ पहाड़ियां दीखती हैं, जो छोटानागपुर की बहिर्वर्ती पहाड़ियां हैं। भौगोलिक विशेषताओं एवं उच्चावच की विभिन्नताओं के आधार पर इस मैदान को दो उपविभागों में बाँटा जा सकता है - उत्तरी बिहार का मैदान तथा दक्षिणी बिहार का मैदान।

• उत्तरी बिहार का मैदान —

यह मैदान, समतल तथा चौरस है, जो गंगा नदी के उत्तर में विस्तृत है। घाघरा, गण्डक, बूढ़ी गण्डक, कोसी आदि नदियाँ इसे कई दोआबों में बाँटती हैं — घाघरा - गण्डक दोआब, गण्डक - कोसी दोआब एवं कोसी महानंदा दोआब। यह मैदान हिमालय से निकलने वाली नदियों एवं उनके छोड़े हुए पुराने मार्गों से निर्मित है। इसकी सामान्य ढाल गंगा की दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर है परन्तु पश्चिमी भाग में इसकी ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। प्राकृतिक विभिन्नताओं के आधार पर इस मैदान को चार भागों में बांटा जा सकता है।

1. तराई (भाबर) तथा उपतराई क्षेत्र
2. भांगर भूमि (पुराना जलोढ़ क्षेत्र)
3. खादर भूमि (नया जलोढ़ क्षेत्र)
4. चौर और मन

Scanned with CamScanner

1. तराई (भाबर) तथा उपतराई क्षेत्र – यह शिवालिक श्रेणी के नीचे पश्चिम से पूर्व की ओर एक संकीर्ण पट्टी में विस्तृत है, जो एक सपाट आर्द्र क्षेत्र है। इससे सटे दक्षिण में उपतराई क्षेत्र पाया जाता है, जो एक दलदली क्षेत्र है।

2. भांगर भूमि – इसके अंतर्गत प्राकृतिक बाँध एवं दोआब मैदान आते हैं। ये सामान्यतः आसपास के क्षेत्र से ऊँचे दीखते हैं। भांगर व खादर के बीच एक मध्यवर्ती ढाल स्पष्ट रूप से दीखता है। भांगर भी बाढ़ मैदान है लेकिन इसका निक्षेपण खादर की तरह प्रत्येक वर्ष नहीं होता।

3. खादर भूमि – यह नवीन जलोढ़ का विस्तृत क्षेत्र है, जिसका विस्तार गंडक तथा कोसी के बीच है। इस क्षेत्र में नदियों द्वारा दियारा तथा छाड़न झील का निर्माण किया गया है। नदियाँ जब विसर्प बनाकर कई शाखाओं में बँट जाती है तो बीच में 'दियारा भूमि' (River Island) का निर्माण होता है – राघोपुर दियारा, सबलपुर दियारा। खादर भूमि प्रत्येक वर्ष बाढ़ ~~से बंट जाती है तो बीच में 'दियारा भूमि'~~ बाढ़ से प्रभावित होती है, अतः यह अत्यंत उपजाऊ है।

4. चौर तथा मन – उत्तरी बिहार में अनेक जगह निम्न भूमि पायी जाती है जिसे स्थानीय भाषा में 'चौर' (Chaur) कहा जाता है। वास्तव में ये नदियों के पुराने मार्ग हैं, जो वर्षा के समय पानी से भरे होते हैं। इस मैदान में नदियों के किनारे प्राकृतिक तटबंध पाये जाते हैं। सारण, चम्पारण, मधुबनी आदि जिलों में नदियों की व्यक्त धाराओं से बनी छाड़न झीलों की बहुलता है, जो 'मन' कहे जाते हैं। इसका उपयोग मछलीपालन एवं मखाना उत्पादन के लिए होता है। चौर तथा मन जलजमाव के क्षेत्र हैं।

Scanned with CamScanner